प्रेस विज्ञप्ति

सांची विश्वविद्यालय के उद्यान में खिले 60 किस्म के फूल

- **विश्वविद्यालय परिसर का बाग़ गुलज़ार**
- **बड़ी संख्या में लोग पहुंच रहे बाग़ को देखने**
- **औषधीय और खुशबूदार पौधों के भी उद्यान**
- **आध्यात्मिक उद्यान भी विकसित किया गया**
- **विलुप्त हो रही पेड़-पौधों की प्रजातियों का संरक्षण एवं संवर्धन कर रहा सांची विश्वविद्यालय**
- **पानी में लगाए जाने वाले पौधे भी लगाए गए परिसर में**

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के बारला स्थित अकादमिक परिसर में इन दिनों फूलों की बहार है। विश्वविद्यालय परिसर के चारों तरफ फूलों की तकरीबन 60 से अधिक किस्में पल्लवित हो रही हैं। हर तरफ रंग-बिरंगे फूल ही फूल खिले हैं जो फिज़ां में खुशबू बिखेर रहे हैं। बड़ी संख्या में लोग इन फूलों को देखने के लिए पहुंच रहे हैं। इन फूलों के अलावा विश्वविद्यालय में औषधीय गार्डन भी विकसित किया गया है जिनमें औषधीय पौधों के अलावा एरोमैटिक(खुशबू देने वाले) पौधे भी लगाए गए हैं।

सांची विश्वविद्यालय के सहायक निदेशक(उद्यानिकी) श्री कृपाल सिंह वर्मा का कहना है कि विश्वविद्यालय परिसर में ही एक आध्यात्मिक उद्यान, नवग्रह उद्यान एवं राशि उद्यान भी विकसित किए गए हैं जहां पर ऐसे पेड़ों को लगाया गया है जिनका अलग-अलग धर्म और दर्शन में ज़िक्र किया गया है। पीपल, बरगद और समी के पेड़ों की किस्मों के साथ-साथ पाम के वृक्ष, क्रिसमस ट्री, खजूर के वृक्ष इत्यादि पेड़ों की प्रजातियों को सांची विश्वविद्यालय में ही ग्राफ्ट कर तैयार किया गया है।

सांची विश्वविद्यालय अपनी नर्सरी में कई विलुप्त हो रही पेड़-पौधों की प्रजातियों के संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रयास कर रहा है। विश्वविद्यालय की नर्सरी में चिरौंजी, सफेद और पीले पलाश की प्रजातियों को लगाया गया है। इसके अलावा बड़ी संख्या में Ornamental Plants अलंकृत पौधे जैसे मोरपंखी, एकजोरा, बॉटल ब्रश, कचनार, चांदनी जैसे पौधे लगाए गए हैं। इन पौधों को घरों की सजावट के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

नर्सरी में फूलों की 60 विभिन्न वेरायटियों(किस्म) में लाइनेरिया, फ्लॉक्स, केलेंड्यूला, स्वीट सुल्तान, स्वीट विलियम, पॉपी, ऑर्क टोटिस, कैलिफोरनिया पॉपी, एनट्रेनियम, डहेलिया, सूरजमुखी और हैरीक्राइसम प्रमुख हैं।

सांची विश्वविद्यालय की नर्सरी में जलीय पौधों को भी लगाया गया है। जिनमें सिंघाड़ा, कमल और अमेज़न लिलि प्रमुख हैं।

THE SMART NEWSPAPER

DB POST

THURSDAY
1 MARCH 2018
BHOPAL | PAGES 12
VOL 2 | ISSUE 350
PRICE Rs. 1.50

Sanchi University is preserving rare flower & medicinal plant species in its gardens

60 varieties of flowers bring spring to campus

These are developed & maintained by students under expert guidance

DB Post Correspondent

Bhopal: A colourful burst of spring flowers is delighting visitors to Sanchi University of Buddhist-Indic Studies and the 100-acre university campus has become a centre of attraction for students and visitors. With over 3,000 flowers starting to bloom, the largest collection of rare flowers, such as lunaria, phlox, calendula and many more, has grown bigger than ever.

The university campus has also cultivated several more gardens, such as a Spiritual Garden, Navgrah Garden and Rashi (Zodiac) Garden by growing some special plants and flowers. Given the natural endowment of Sanchi University, a majority of seasonal fruits and vegetables are supplied by the 'kitchen garden' located on the campus.

These gardens are developed and maintained by students under the expert guidance of organic farmers and horticulturists. The university's green cover is hosting local flora and fauna in their full natural glory. Large trees with dense shadows — khirni, peepul, mango, neem, sal — along with small fruit-bearing trees and shrubs are systematically cultivated to maintain the ecological balance of the area and improve its micro-climate.

We've planted the saplings on the basis of our traditional knowledge. Many plants that are mentioned in our holy books are here in this garden. We've prepared saplings on our own campus using the graft method. Apart from these special plants, there are many varieties of mango, Christmas tree, date palm, peepul & many more'
- Kripal Singh, *assistant director (Horticulture), Sanchi University*

Preserving rare plants

- **The university** is preserving rare plants with medicinal values in its garden
- **At the** medicinal plant garden on the campus, there are many rare plants that are spreading a special odour
- **Yellow &** white bastard teak & the chirounji tree adorn the campus, too
- **Rare species** of flowers, such as Sweet Sultan, Sweet William & Dahlia cover a major part of the garden
- **Aquatic plants,** such as Water Chestnut & Amazon Lily, have also been planted on the campus on a small scale

दैनिक जागरण
01 मार्च, 2018

सांची विश्वविद्यालय के उद्यान में खिले 60 किस्म के अनोखे फूल

● जागरण रिपोर्टर ●

सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के बारला स्थित अकादमिक परिसर में इन दिनों फूलों की बहार है। विश्वविद्यालय परिसर के चारों तरफ फूलों की तकरीबन 60 से अधिक किस्में पल्लवित हो रही हैं। हर तरफ रंग-बिरंगे फूल ही फूल खिले हैं जो फिजा में खुशबू बिखेर रहे हैं। सांची विश्वविद्यालय के सहायक निदेशक (उद्यानिकी) कृपाल सिंह वर्मा का कहना है कि विश्वविद्यालय परिसर में ही एक आध्यात्मिक उद्यान, नवग्रह उद्यान एवं राशि उद्यान भी विकसित किए गए हैं। यहां कई विलुप्त हो रही पेड़-पौधों की प्रजातियों के संरक्षण और संवर्धन की दिशा में प्रयास किया जा रहा है। विश्वविद्यालय की नर्सरी में चिरौंजी, सफेद और पीले पलाश की प्रजातियों को लगाया गया है। नर्सरी में फूलों की 60 विभिन्न वेरायटियों(किस्म) में लाइनेरिया, फ्लॉक्स, केलेंड्यूला, स्वीट सुल्तान, स्वीट विलियम, पॉपी, ऑर्क टोटिस, कैलिफोरनिया पॉपी, एनट्रेनियम, डहेलिया, सूरजमुखी और हैरीक्राइसम प्रमुख हैं।

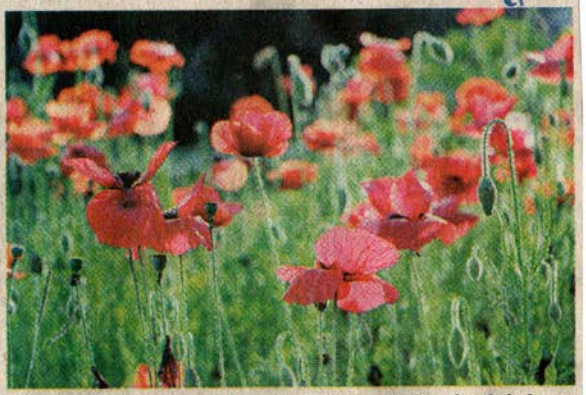

रायसेन भास्कर

भोपाल, गुरुवार 01 मार्च, 2018 फाल्गुन शुक्ल पक्ष-14, 2074

फूलों की बहार विश्वविद्यालय परिसर का बाग गुलज़ार, औषधीय और खुशबूदार पौधों के भी उद्यान, बाग को देखने पहुंच रहे लोग

विवि में आध्यात्मिक, नवग्रह और राशि उद्यान विकसित

भास्कर संवाददाता | रायसेन

सांची बौद्ध.भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के बारला स्थित अकादमिक परिसर में इन दिनों फूलों की बहार है। विश्वविद्यालय परिसर के चारों तरफ फूलों की तकरीबन 60 से अधिक किस्में पल्लवित हो रही हैं। हर तरफ रंग-बिरंगे फूल ही फूल खिले हैं जो फिजा में खुशबू बिखेर रहे हैं। बड़ी संख्या में लोग इन फूलों को देखने के लिए पहुंच रहे हैं। इन फूलों के अलावा विश्वविद्यालय में औषधीय गार्डन भी विकसित किया गया है।

सांची विश्वविद्यालय के सहायक निदेशक (उद्यानिकी) कृपाल सिंह वर्मा का कहना है कि विश्वविद्यालय परिसर में ही एक आध्यात्मिक उद्यान, नवग्रह उद्यान एवं राशि उद्यान भी विकसित किए गए हैं जहां पर ऐसे पेड़ों को लगाया गया है जिनका अलग-अलग धर्म और दर्शन में जिक्र किया गया है। पीपल बरगद और समी के पेड़ों की किस्मों के साथ-साथ पाम के वृक्ष क्रिसमस ट्री, खजूर के वृक्ष इत्यादि पेड़ों की प्रजातियों को सांची विश्वविद्यालय में ही ग्राफ्ट कर तैयार किया गया है।

इन किस्मों के फूलों से महंगा उद्यान

नर्सरी में फूलों की 60 विभिन्न वैरायटियों में लाइनेरिया, फ्लॉक्स, केलेंड्यूला, स्वीट सुल्तान, स्वीट विलियम, पॉपी, ऑर्क टोटिस, कैलिफोरनिया पॉपी, एनट्रेनियम, डेहेलिया, सूरजमुखी और हैरीक्राइसम आदि प्रमुख फूलों को यहां पर लगाया गया है। इसके अलावा सांची विश्वविद्यालय की नर्सरी में जलीय पौधों को भी लगाया गया है। जिनमें सिंघाड़ा, कमल और अमेज़न लिली प्रमुख हैं।

विलुप्त हो रही प्रजातियों के पौधों का हो रहा संरक्षण

सांची विश्वविद्यालय अपनी नर्सरी में कई विलुप्त हो रहे पेड़-पौधों की प्रजातियों के संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रयास कर रहा है। विश्वविद्यालय की नर्सरी में चिरौंजी सफेद और पीले पलाश की प्रजातियों को लगाया गया है। इसके अलावा बड़ी संख्या में अलंकृत पौधे जैसे मोरपंखी, एकजोरा, बॉटल ब्रश, कचनार, चांदनी जैसे पौधे लगाए गए हैं। इन पौधों को घरों की सजावट के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

dailyhunt

Hindi News >> हिन्दुस्थान समाचार >> madhyapradesh

NEWS Wednesday, 28 Feb, 6.45 pm

मध्य प्रदेश

सांची विश्वविद्यालय के उद्यान में खिले 60 किस्म के फूल

भोपाल, 28 फरवरी (हि.स.)। सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के बारला स्थित अकादमिक परिसर में इन दिनों फूलों की बहार है। विश्वविद्यालय परिसर के चारों तरफ फूलों की तकरीबन 60 से अधिक किस्में पल्लवित हो रही हैं। हर तरफ रंग-बिरंगे फूल ही फूल खिले हैं जो फिज़ां में खुशबू बिखेर रहे हैं। बड़ी संख्या में लोग इन फूलों को देखने के लिए पहुंच रहे हैं। इन फूलों के अलावा विश्वविद्यालय में औषधीय गार्डन भी विकसित किया गया है जिनमें औषधीय पौधों के अलावा एरोमैटिक (खुशबू देने वाले) पौधे भी लगाए गए हैं। जानकारी के अनुसार सांची विश्वविद्यालय के सहायक निदेशक (उद्यानिकी) कृपाल सिंह वर्मा का कहना है कि विश्वविद्यालय परिसर में ही एक आध्यात्मिक उद्यान, नवग्रह उद्यान एवं राशि उद्यान भी विकसित किए गए हैं जहां पर ऐसे पेड़ों को लगाया गया है जिनका अलग-अलग धर्म और दर्शन में ज़िक्र किया गया है। पीपल, बरगद और समी के पेड़ों की किस्मों के साथ-साथ पाम के वृक्ष, क्रिसमस ट्री, खजूर के वृक्ष इत्यादि पेड़ों की प्रजातियों को सांची विश्वविद्यालय में ही ग्राफ्ट कर तैयार किया गया है। सांची विश्वविद्यालय अपनी नर्सरी में कई विलुप्त हो रही पेड़-पौधों की प्रजातियों के संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रयास कर रहा है। विश्वविद्यालय की नर्सरी में चिरौंजी, सफेद और पीले पलाश की प्रजातियों को लगाया गया है। इसके अलावा बड़ी संख्या में अलंकृत पौधे जैसे मोरपंखी, एकजोरा, बॉटल ब्रश, कचनार, चांदनी जैसे पौधे लगाए गए हैं। इन पौधों को घरों की सजावट के लिए इस्तेमाल किया जाता है। नर्सरी में फूलों की 60 विभिन्न वेरायटियों(किस्म) में लाइनेरिया, फ्लॉक्स, केलेंड्यूला, स्वीट सुल्तान, स्वीट विलियम, पॉपी, ऑर्क टोटिस, कैलिफोरनिया पॉपी, एनट्रेनियम, डहेलिया, सूरजमुखी और हैरीक्राइसम प्रमुख हैं। सांची विश्वविद्यालय की नर्सरी में जलीय पौधों को भी लगाया गया है। जिनमें सिंघाड़ा, कमल और अमेज़न लिलि प्रमुख हैं। हिन्दुस्थान समाचार/राजू

Dailyhunt

abhitak.news

Posted on March 1, 2018 by Virendra Sinha

सांची विश्वविद्यालय के उद्यान में खिले 60 किस्म के फूल

दीपक कांकर

रायसेन 01 मार्च ;अभी तक; सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के बारला स्थित अकादमिक परिसर में इन दिनों फूलों की बहार है। विश्वविद्यालय परिसर के चारों तरफ फूलों की तकरीबन 60 से अधिक किस्में पल्लवित हो रही हैं। हर तरफ रंग-बिरंगे फूल ही फूल खिले हैं जो फिज़ां में खुशबू बिखेर रहे हैं। बड़ी संख्या में लोग इन फूलों को देखने के लिए पहुंच रहे हैं। इन फूलों के अलावा विश्वविद्यालय में औषधीय गार्डन भी विकसित किया गया है जिनमें औषधीय पौधों के अलावा एरोमैटिक(खुशबू देने वाले) पौधे भी लगाए गए हैं।

सांची विश्वविद्यालय के सहायक निदेशक(उद्यानिकी) श्री कृपाल सिंह वर्मा का कहना है कि विश्वविद्यालय परिसर में ही एक आध्यात्मिक उद्यान, नवग्रह उद्यान एवं राशि उद्यान भी विकसित किए गए हैं जहां पर ऐसे पेड़ों को लगाया गया है जिनका अलग-अलग धर्म और दर्शन

में ज़िक्र किया गया है। पीपल, बरगद और समी के पेड़ों की किस्मों के साथ-साथ पाम के वृक्ष, क्रिसमस ट्री, खजूर के वृक्ष इत्यादि पेड़ों की प्रजातियों को सांची विश्वविद्यालय में ही ग्राफ्ट कर तैयार किया गया है।

सांची विश्वविद्यालय अपनी नर्सरी में कई विलुप्त हो रही पेड़-पौधों की प्रजातियों के संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रयास कर रहा है। विश्वविद्यालय की नर्सरी में चिरौंजी, सफेद और पीले पलाश की प्रजातियों को लगाया गया है। इसके अलावा बड़ी संख्या में Ornamental Plants अलंकृत पौधे जैसे मोरपंखी, एकजोरा, बॉटल ब्रश, कचनार, चांदनी जैसे पौधे लगाए गए हैं। इन पौधों को घरों की सजावट के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

नर्सरी में फूलों की 60 विभिन्न वेरायटियों(किस्म) में लाइनेरिया, फ्लॉक्स, केलेंड्यूला, स्वीट सुल्तान, स्वीट विलियम, पॉपी, ऑर्क टोटिस, कैलिफोरनिया पॉपी, एनट्रेनियम, डहेलिया, सूरजमुखी और हैरीक्राइसम प्रमुख हैं।

सांची विश्वविद्यालय की नर्सरी में जलीय पौधों को भी लगाया गया है। जिनमें सिंघाड़ा, कमल और अमेज़न लिलि प्रमुख हैं।

DainikBhaskar.com

विवि में आध्यात्मिक, नवग्रह और राशि उद्यान विकसित

Bhaskar News Network | Last Modified - Mar 01, 2018, 03:05 AM IST

सांची बौद्ध.भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के बारला स्थित अकादमिक परिसर में इन दिनों फूलों की बहार है।...

सांची बौद्ध.भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के बारला स्थित अकादमिक परिसर में इन दिनों फूलों की बहार है। विश्वविद्यालय परिसर के चारों तरफ फूलों की तकरीबन 60 से अधिक किस्में पल्लवित हो रही हैं। हर तरफ रंग-बिरंगे फूल ही फूल खिले हैं जो फिजा में खुशबू बिखेर रहे हैं। बड़ी संख्या में लोग इन फूलों को देखने के लिए पहुंच रहे हैं। इन फूलों के अलावा विश्वविद्यालय में औषधीय गार्डन भी विकसित किया गया है।

सांची विश्वविद्यालय के सहायक निदेशक (उद्यानिकी) कृपाल सिंह वर्मा का कहना है कि विश्वविद्यालय परिसर में ही एक आध्यात्मिक उद्यान, नवग्रह उद्यान एवं राशि उद्यान भी विकसित किए गए हैं जहां पर ऐसे पेड़ों को लगाया गया है जिनका अलग-अलग धर्म और दर्शन में जिक्र किया गया है। पीपल बरगद और समी के पेड़ों की किस्मों के साथ-साथ पाम के वृक्ष क्रिसमस ट्री, खजूर के वृक्ष इत्यादि पेड़ों की प्रजातियों को सांची विश्वविद्यालय में ही ग्राफ्ट कर तैयार किया गया है।

फूलों की बहार

विश्वविद्यालय परिसर का बाग गुलज़ार, औषधीय और खुशबूदार पौधों के भी उद्यान, बाग को देखने पहुंच रहे लोग

इन किस्मों के फूलों से महंगा उद्यान

नर्सरी में फूलों की 60 विभिन्न वैरायटियों में लाइनेरिया, फ्लॉक्स, केलेंड्यूला, स्वीट सुल्तान, स्वीट विलियम, पॉपी, ऑर्क टोटिस, कैलिफोरनिया पॉपी, एनट्रेनियम, डहेलिया, सूरजमुखी और हैरीक्राइसम आदि प्रमुख फूलों को यहां पर लगाया गया है। इसके अलावा सांची विश्वविद्यालय की नर्सरी में जलीय पौधों को भी लगाया गया है। जिनमें सिंघाड़ा, कमल और अमेज़न लिली प्रमुख हैं।

विलुप्त हो रही प्रजातियों के पौधों का हो रहा संरक्षण

सांची विश्वविद्यालय अपनी नर्सरी में कई विलुप्त हो रहे पेड़-पौधों की प्रजातियों के संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रयास कर रहा है। विश्वविद्यालय की नर्सरी में चिरौंजी सफेद और पीले पलाश की प्रजातियों को लगाया गया है। इसके अलावा बड़ी संख्या में अलंकृत पौधे जैसे मोरपंखी, एकजोरा, बॉटल ब्रश, कचनार, चांदनी जैसे पौधे लगाए गए हैं। इन पौधों को घरों की सजावट के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

नईदुनिया
Wednesday, March 7, 2018

सांची विश्वविद्यालय के उद्यान में खिले रहे 60 किस्म के फूल

Published: Thu, 01 Mar 2018 04:15 PM (IST) | **Updated:** Thu, 01 Mar 2018 04:26 PM (IST)

By: Editorial Team

संबंधित खबरें

- चिलचिलाती गर्मी में भी पेड़ की सुरक्षा में डटे रहते हैं जवान
- अधिकारों की लड़ाई में उलझा सांची का बौद्ध विश्वविद्यालय
- सांची विवि में अधिकारों की तनातनी, प्रोजेक्ट में सहयोग से श्रीलंका का इंकार
- सांची बौद्ध विश्वविद्यालय की शुरुआत 6 कोर्स के साथ
- सांची विवि में संस्कृत का सर्टिफिकेट कोर्स शुरू

रायसेन। सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के बारला स्थित अकादमिक परिसर में इन दिनों फूलों की बहार है। विश्वविद्यालय परिसर के चारों तरफ फूलों की तकरीबन 60 से अधिक किस्में पल्लवित हो रही हैं। हर तरफ रंग-बिरंगे फूल ही फूल खिले हैं जो फिजा में खुशबू बिखेर रहे हैं। बड़ी संख्या में लोग इन फूलों को देखने के लिए पहुंच रहे हैं। इन फूलों के अलावा विश्वविद्यालय में औषधीय गार्डन भी विकसित किया गया है जिनमें औषधीय पौधों के अलावा एरोमैटिक(खुशबू देने वाले) पौधे भी लगाए गए हैं।

सांची विश्वविद्यालय के सहायक निदेशक (उद्यानिकी) कृपाल सिंह वर्मा का कहना है कि विश्वविद्यालय परिसर में ही एक आध्यात्मिक उद्यान, नवग्रह उद्यान एवं राशि उद्यान भी विकसित किए गए हैं जहां पर ऐसे पेड़ों को लगाया गया है जिनका अलग-अलग धर्म और दर्शन में जक्रि किया गया है।

पीपल, बरगद और समी के पेड़ों की किस्मों के साथ-साथ पाम के वृक्ष, क्रिसमस ट्री, खजूर के वृक्ष इत्यादि पेड़ों की प्रजातियों को सांची विश्वविद्यालय में ही ग्राफ्ट कर तैयार किया गया है। सांची विश्वविद्यालय अपनी नर्सरी में कई

विलुप्त हो रही पेड़, पौधों की प्रजातियों के संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रयास कर रहा है। विश्वविद्यालय की नर्सरी में चिरौंजी, सफेद और पीले पलाश की प्रजातियों को लगाया गया है। इसके अलावा बड़ी संख्या में हिचसीहाचन, नचहाज अलंकृत पौधे जैसे मोरपंखी, एकजोरा, बॉटल ब्रश, कचनार, चांदनी जैसे पौधे लगाए गए हैं।

प्रेस विज्ञप्ति

म्यान्मार की प्रोफेसर ने की सांची विश्वविद्यालय के छात्रों से भेंट

- **प्रो. सॉव-ह-टुट बिहार के मगध विश्वविद्यालय में हैं कार्यरत्**
- **म्यान्मार के बारे में दी छात्रों को जानकारी**
- **थेरवाद बौद्ध धर्म का अभ्यास किया जाता है म्यान्मार में**

म्यान्मार के अंतरराष्ट्रीय संबोधि संस्थान की प्रो. डॉ. संदार सॉव-ह-टुट ने सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के प्राध्यपकों और छात्रों और शोधार्थियों से भेंट की। डॉ सॉव-ह-टुट ने विश्वास जताया है कि म्यान्मार के अंतरराष्ट्रीय संबोधि संस्थान और सांची विश्वविद्यालय के बीच **स्टूडेंट एक्सचेंज प्रोग्राम** तथा **फैकल्टी एक्सचेंज प्रोग्राम** को लेकर सहमति बन सकती है।

डॉ. सॉव-ह-टुट ने छात्रों से भेंट के दौरान बताया कि बिहार के मगध विश्वविद्यालय से अगर सहमति बनती है तो यहां पर स्नातक स्तर की पढ़ाई कर रहे छात्र सांची विश्वविद्यालय में एम.ए, व अन्य पाठ्यक्रमों में सम्मिलित होकर लाभ उठा सकते हैं। डॉ. सॉव-ह-टुट ने सांची विवि के छात्रों को म्यान्मार में उच्च शिक्षा के स्तर के विषय में बताया।

सांची विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहे विएतनामी छात्रों से मुलाकात के दौरान डॉ. सॉव-ह-टुट ने बताया कि म्यान्मार में बौद्ध दर्शन की शाखा थेरवाद का अभ्यास किया जाता है। शोध की गुणवत्ता के स्तर को कायम रखने के उद्देश्य से सांची विश्वविद्यालय में प्रत्येक वर्ष एम.ए,एम.फिल तथा पी.एच.डी के छात्रों का चयन प्रेवश परीक्षा एवं साक्षात्कार के माध्यम से होता है। यह परीक्षा प्रत्येक वर्ष जून-जुलाई माह में होती है। लेकिन विदेशी छात्रों को प्रवेश परीक्षा से छूट होती है, उन्हें सिर्फ साक्षात्कार परीक्षा में सम्मिलित होना होता है।

सांची वि.वि पी.एच.डी के प्रत्येक छात्र को रु.14000 प्रतिमाह तथा एम.फिल के प्रत्येक छात्र को रु.8000 प्रतिमाह की छात्रवृत्ति देता है। इसी तरह एम.ए के मेरिट पाने वाले छात्र को भी प्रत्येक माह रु. 3000 की छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है।

डॉ. सॉव-ह-टुट ने सांची विश्वविद्यालय में छात्रों को दी जाने वाली छात्रवृत्ति के बारे में जानकर काफी उत्साहित थीं। छात्रों तथा प्राध्यापकों के भेंट के उपरांत उन्होंने आशा जताई की बड़ी संख्या में म्यान्मार के छात्र सांची विश्वविद्यालय में प्रवेश ले सकते हैं।

डॉ. सॉव-ह-टुट म्यान्मार के अंतरराष्ट्रीय संबोधि संस्थान में कार्यरत् हैं और वर्तमान में बिहार बोधगया के मगध विश्वविद्यालय के बौद्ध दर्शन विभाग में विज़िटिंग फैकल्टी के तौर पर सेवाएं दे रही हैं।

प्रदेश टुडे भोपाल, शुक्रवार, 23 मार्च 2018

म्यान्मार की प्रोफेसर ने की सांची विवि के छात्रों से भेंट

भोपाल। म्यान्मार के अंतरराष्ट्रीय संबोधि संस्थान की प्रो. डॉ. संदार सॉव-ह-टुट ने सांची बौद्ध-भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय के प्राध्यपकों और छात्रों और शोधार्थियों से भेंट की। डॉ सॉव-ह-टुट ने विश्वास जताया है कि म्यान्मार के अंतरराष्ट्रीय संबोधि संस्थान और सांची विवि के बीच स्टूडेंट एक्सचेंज प्रोग्राम तथा फैकल्टी एक्सचेंज प्रोग्राम को लेकर सहमति बन सकती है। डॉ. सॉव-ह-टुट ने छात्रों से भेंट के दौरान बताया कि बिहार के मगध विश्वविद्यालय से अगर सहमति बनती है तो यहां पर स्नातक स्तर की पढ़ाई कर रहे छात्र सांची विश्वविद्यालय में एम.ए, व अन्य पाठ्यक्रमों में सम्मिलित होकर लाभ उठा सकते हैं। डॉ. सॉव-ह-टुट ने सांची विवि के छात्रों को म्यान्मार में उच्च शिक्षा के स्तर के विषय में बताया।